Saathi

Date __/__/__

प्रदेशिक भूगोल

द्विवाद से तात्पर्य किसी विज्ञान या विशेष को दो प्रकार के दृष्टिकोण से देखते हुए उसके प्रधान शाखाओं अथवा उपागम को ही सम्पूर्ण विषय मानकर विषय को दो भागो मे बाँटा है।

भूगोल कि वास्तविक विषय क्षेत्र एवं चिन्तन मे इस अधार पर इसका प्रभाव आज भी नकारात्मक ही माना गया है जबकि वास्तव मे ऐसे दोनो पक्ष एक दूसरे के पूरक है। जैसे भौतिक एवं मानव भूगोल की सीखे समझे बिना हम किसी एक का भी भौगोलिक दृष्टिकोण से ही सही-सही चिन्तन प्रस्तुत नही कर सकते है किन्तु विद्वानो ने ऐसा होने नही दिया

(1) भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल (2) क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल

क्रम बद्ध या वर्गीकृत भूगोल के पहलू

क्रमबद्ध भूगोल को प्रकरण भूगोल भी कहा गया है। इसमे भूतल पर विकसित एवं विकाशशील तत्वो का प्रकरण के अधार पर अध्ययन किया जाता है।

हार्टशोर्न के अनुसार- सामान्यतः क्रमबद्ध या प्रकरण भूगोल मे (विश्वव्यापी) अथवा वृहद व्यापी तत्व विशेष के लक्षण उनकी उत्पत्ति व विकास की प्रक्रिया एवं वितरण को समझाया जाता है। इसके अन्तर्गत स्थल, जल, एवं वायु मण्डल उनके तत्व एवं स्वयं मानव द्वारा भूमण्डल पर विकसित तत्वो - कृषि यातायात याग विशिष्ट प्रकार की वस्तीक्रम आदि

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page No.

Date __/__/__

इसका वर्गीकृत विज्ञान से भी निकट से सम्बंध है। भूगोल का उपयुक्त आधा भाग वैज्ञानिक नियमों पर आधारित है। यही नहीं भूगोल की इस महत्व पुर्ण शाखा मै भौतिक भूगोल के अधिकांश तत्व विभिन्न विज्ञानों की इकाइयां है। जबकि हेटनर ने अपने वर्गीकरण द्वारा स्पष्टत समझाया है। विभिन्न भौतिक जैविक एवं सामाजिक विज्ञानों का भूगोल की विभिन्न शाखाओ से स्पष्ट सम्बंध है। जिसे की हार्टशोर्न ने भी समझाया है। फिर इसमे विश्वव्यापी सास्कृतिक तत्वों को भी समझाया जाता है।

19 वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे भौतिक भूगोल का व्यवहारिक पक्ष एवं व्याख्यात्मक निष्कर्ष अधिक महत्व पुर्ण रहे पुर्णत अलग-अलग तो नही किया जा सकता फिर भी भूगोल के अध्ययन का अन्तिम उद्देश्य भिन्न होने से उसे अलग से तो समझा ही जा सकता है। उपर्युक्त समबन्धो को देखते हुए ऐसे भूगोलवेत्ता ने जिन्होंने कि वर्गीकृत भूगोल को ही इस विज्ञान मे पुर्ण महत्व दिया एवं जिन्होंने भूगोल से प्रादेशिक (भूगोल) के वर्णनो के अलग रखने की बात कही। इनका यह कहना है। कि क्योकि वैज्ञानिक नियमो के अधार पर क्षेत्रो की जटिलताओ एवं जाति एकता का विश्लेषण विशेष घटनाओ की भांति नही किया जा सकता फिर भी वर्गीकृत विज्ञान एवं वर्गीकृत भूगोल के मुख्य सम्यताओ की तुलना करने पर उनके अन्तर विशेष है।

Page No. [ ]

Saathi

Date __/__/__

(1) वर्गीकृत विज्ञान की शाखाएँ व सम्बंधित वर्गीकृत भूगोल की शाखाओ मे आपस मे सभ्यता स्पष्ट दिखाई देती है। यह तो विज्ञान मे घटनाओ की शोध से सम्बंधित उपलब्धियों को ग्रहण कर उनकी आवश्यकतानुसार भूतल पर वितरण के सम्बन्ध मे व्याख्या करता है। जबकि भूगोल से समा सम्बन्धित घटना या उसके लक्षणों का विश्लेषण घटना से किस प्रकार का सम्बन्ध है अथवा

(2) कि भौतिक एवं मानवीय अथवा सांस्कृतिक घटनाओ के वितरण को एवं उनके स्वतन्त्र विश्लेषण को ही वर्गीकृत या प्रादेशिक भूगोल नही कह सकते। भूगोल मे ऐसी घटनाओ का क्षेत्रों की भिन्नता के निर्धारण मे क्या स्थान है एवं घटनाओ का क्षेत्रों की भिन्नता के निर्धारण मे क्या स्थान है। इसी भाँति उनका प्रदेश विशेष या भूतल पर स्थानिक वितरण मे क्षेत्रों की घटनाओ से क्या सम्बन्ध है।

(3) वर्गीकृत विज्ञान मे समयानुसार एवं विकास की प्रक्रिया से घटनाओ एवं उनके विशेष लक्षणो से जो जो परिणाम प्राप्त होते है। जबकि वर्गीकृत भूगोल मे विभिन्न घटनाओ के एकात्मक रूप या उससे सृजित एवं सम्बन्धित लक्षणो का वर्णन किया जाता है।

(4) कोई घटना स्थान विशेष पर ही क्यों पायी जाती है, और विशेष घटना कहाँ घटित होगी इसकी व्याख्या करना ही भूगोल का एकमात्र उद्देश्य नही है। परन्तु घटनाओ के अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट करने मे यदि ऐसी संकल्पना सहायक होती भूगोलवेत्ता इस स्थिति मे जातिगत सकलपना की भी उपेक्षा नही कर सकता

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date / /

(5) हार्टशोर्न के अनुसार - यदि वर्गीकृत भूगोल की व्यक्तिगत तत्वों के लक्षणों प्रक्रियाओं एवं वितरण से सम्बंधित अध्ययन का अंग माना जाय तो निश्चित रूप से ऐसा भूगोल न सिर्फ विज्ञान का अंग होगा बल्कि विज्ञान मे की गयी खोजो को शोधान वाले भी होते है। जबकि उनके विवरण स्वरूप व सम्बन्धित भूप्राप्ति पर यदा कदा ही ध्यान देते है। तथा उनका अन्य घटनाओ से अन्तर्संबंध की तो प्राय: उपेक्षा कर दी जाती है। घटनाओ के परिवेश को उनकी स्थानिक स्थिति एवं तुलनात्मक महत्ता को एवं उनकी मानचित्रीय स्थिति एवं महत्ता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/__

स्थानिक संगठन

भूगोल का वास्तविक विकास 16 वी शताब्दी के बाद से ही हुआ। इस समय तक भूतल के अधिकांश अज्ञात एवं सुदूर प्रदेशो की सफलतापूर्वक खोज होने लगी थी 17 वीं शताब्दी मे सर्वप्रथम वारेनियस ने भूगोल की विषय सूची मे तथ्यात्मक विकास हेतु सफल प्रयास किया

वारेनियस के अनुसार - भूगोल पृथ्वी की सतह को अध्ययन का केन्द्र मानकर उसे समझने वाली विद्या है। इसके अन्तर्गत जलवायु धरातलीय लक्षण - जल- वन एवं मरुभूमि · खनिज पशु व भूतल पर बसे मानव जैसे तथ्यो का निरीक्षण एवं वर्णन होता है।

वारेनियस - ने भूगोल विद्या की उपयुक्त परिभाषा अपनी अल्प आयु (28 वर्ष) मे ही एक अग्रदृष्टा बनकर दी। इसमे पहली बार पृथ्वी की सतह उस पर विकसित प्राकृतिक परिवेश के सभी प्रधान तत्वो स्थल या स्थिति जलवायु धरातल जल मरुस्थल खनिज पशु एवं वनस्पति जगत को ही सम्मिलित नही किया बल्कि मानव के बहुरूपी विकासशील व सांस्कृतिक तत्वो के सशक्त कारको एवं तथ्यो जिनमे धार्मिक सास्कृतिक एवं विशिष्ट मानवीय कृतियाँ जैसे नगर शासन तन्त्र आदि को सम्मिलित कर भूगोल के प्रति अपनी अन्तरम पैठ का अनूठा परिचय दिया

18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध मे भूगोल के अभिनव स्वरूप के विकास की दिशा मे महत्वपूर्ण खोज

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

विशेष अध्ययन प्रेक्षण एवं चिन्तन किया गया इस दृष्टि से काण्ट हम्बोल्ट रिटर एवं रैट्जैल के प्रयास सराहनीय माने जाते है।

हार्टशोर्न के अनुसार – काण्ट ने इस प्रकार मानव एवं प्राकृतिक प्रक्रियाओ के मध्य विभेदीकरण नही किया। इस प्रकार काण्ट ने भूगोल के दर्शन एवं स्वरूप को सुदृढ बनाने का जो कुछ प्रयास किया।

रिटर के अनुसार – भूगोल का उद्देश्य सम्पूर्ण भूतल पर प्राकृतिक एवं सांस्कृति उपज की वस्तुओं भौतिक एवं मानवीय दशाओ की सजीव चित्रण एवं विधि से प्रस्तुत करना है। इसका उद्देश्य उपर्युक्त तथ्यो की क्रिया शीलता के दृश्य से मानव को अवगत करना है।

भूगोल की परिभाषा लिखते हुऐ रिटर ने स्पष्ट किया भूगोल विज्ञान का वह विभाग है जिससे भूमण्डल के सभी लक्षणो घटनाओ उनके सम्बधो का पृथ्वी को स्वतन्त्र रूप से मानते हुए वर्णन किया जाता है।

हम्बोल्ट – की परिभाषा – भूगोल प्रकृति अध्ययन से सम्बन्धित विधा है अन्य सभी व्यवसायित विज्ञान चाहे प्राकृतिक अथवा जैविक है। पृथ्वी की घटनाओ से सम्बन्धित है ऐसे विज्ञान व्यक्तिगत रूप मे पशु वनस्पति अन्य ठोस पदार्थ या जीवावशेष की बनावट एवं प्रक्रिया का ही अध्ययन है। जबकि भूगोल का सम्बन्ध उपर्युक्त सभी वस्तुओ से एक साथ सह सम्बध रूप मे जैसी पायी जाती है

Date ___/___/___

महान् फ्रांसीसी भूगोलवेता वाइडल डी ला ब्लाश ने भूगोल की परिभाषा निम्न प्रकार से समझायी मानव का ऐतिहासिक घटनाओ के प्रति इस विज्ञान की रुचि वहीं तक है। जहा तक कि इसका सम्बन्ध किसी देश मे घटित घटनाओं से होता है। इसके अभाव मे देशो के गुण एवं सम्भावनाएँ सुषुप्त या अपूर्ण रहती है

ब्लाश के अनुसार — भूगोल एक विशिष्ट विद्या है पृथ्वी की घटनाओ की अध्ययन स्थान स्थिति एवं वितरण के सम्बन्ध मे किया जाना चाहिए अतः भूगोल के अध्ययन क्षेत्र मे दोहरा तथ्य पृथ्वी एवं मानव सम्मिलित है।

हेटनर ने प्रारम्भ से ही भूगोल का क्षेत्र वितरण विज्ञान माना वह रिचथोफन के चिन्तन से विशेष प्रभावित रहा हेटनर की परिभाषा को हार्टशोन ने उद्धृत करते हुए 1959 ई॰ मे लिखा

इस प्रकार रिटर के बाद रिचथोफन एवं हेटनर दोनों ने प्रायः एक से स्वर मे पृथ्वी के प्रदेशो क्षेत्रो अथवा स्थानो के विस्तृत एवं शोध पूर्ण अध्ययन की बात तो कही थी

हार्टशोर्न ने सर्वप्रथम 1939 ई॰ मे भूगोल की परिभाषा इस प्रकार दी है।

भूतल के विभिन्नतारूपी लक्षणो का शुद्ध व्यवस्थित एवं तर्क पूर्ण विवरण एवं व्याख्या करना ही भूगोल की मंशा है

उपर्युक्त परिभाषाओं मे हार्टशोर्न द्वारा दी गई परिभाषा को तेजी से यूरोप एवं अमेरिका मे मान्यता मिली

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date ___/___/___

① पृथ्वी की सतह से सम्बन्धित विज्ञान है।
② पृथ्वी की सतह पर पाये जाने वाली विभिन्ताओं की इसमे सही सही व्याख्या होती है।
③ पृथ्वी की सतह पर पाये जाने वाली विभिन्ताओं की भू पृष्ठभूमि मे प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के तत्वो का महत्व पूर्ण हाथ रहा है
④ हार्टशोर्न ने अपने लेखो विविध रचनाओ और सभापति पद से दिये गये प्रवचनो मे स्पष्ट किया कि भूगोल क्षेत्रिय विभिन्नताओं से सम्बन्धित है
⑤ धरातल पर सृजित होती की विभिन्नता की व्याख्या तर्कपुर्ण तथ्यात्मक एवं सही सही होनी चाहिए
1939 से लेकर वर्तमान तक आरु सभी परिवर्तनो के बावजुद हार्टशोर्न की परिभाषा आज भी भूगोल की प्राय: सर्वमान्य परिभाषा बनी हुई है
ब्रिटिश भूगोल वेताओ की समिति - ने भूगोल की परिभाषा निम्न प्रकार से की क्षेत्रो की सम्बन्धों एवं विभिन्ताओ के विशेष सन्दर्भ मे किया गया भूतल का वर्णन ही भूगोल विद्या है।
अमरीकन उच्च शिक्षा शब्द कोश के अनुसार भूगोल भूतल की क्षेत्रिय विभिन्नताओं का अध्ययन है भूतल पर पाये जाने वाले प्रमुख तत्वो जैसे- जलवायु धरातल बनस्पति जनसंख्या भूमि का उपयोग एवं उद्योग आदि - मानव स्वभावत: चचल एवं गतीशील है वह स्वयं भी परिवेश निर्माण का सशक्त कारक है इस प्रकार प्रकृति का उपादान होते हुए भी वह भूगोल मे प्रकृति की भाँति ही विशिष्ट अंग है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page No.

Date __/__/__

भूगोल एक विज्ञान है

भूगोल के सम्बन्ध मे यह प्रश्न हमेशा उठता है। कि क्या भूगोल सिद्धान्तो नियमों और सर्वमान्य सत्य को स्थापित कर सकता है। ताकि उसे विज्ञान कहा जा सके क्योंकि वैज्ञानिक अध्ययन का उद्देश्य है। भूगोल एक क्षेत्रवर्णनी विज्ञान है। भूगोल खगोल शास्त्र एवं भू-भौतिक क्रमशः पृथ्वी की सतह आन्तरिक एवं भू गर्भ से सम्बंधित है। दुसरी ओर पृथ्वी की सतह कि विविधता सर्वज्ञात है। जड़ जैविक एवं मानवीय तथ्य एवं उनके स्थानिक कालिक सम्बन्ध अत्यन्त विषम विषय वस्तु को उभारते है। अब प्रश्न यह है। कि क्या भूगोल की विषय वस्तु एवं अध्ययन विधी अन्तर्सम्बन्ध विषयक मूल एवं नियमो का प्रतिपादन कर सकती है

अलेक्जेंडर वान हम्बोल्ट - ने 19 वी सदी के मध्य मे ही भौगोलिक अध्ययन मे वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग तथा आनुभाविक अध्ययन की प्रधानता की ओर ध्यान उत्कृष्ट किया था

कार्ल रिटर - ने भूगोल के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पृथ्वी की विविधता की पृष्ठभूमि मे कार्यरत सामान्य नियमो की खोज करना भूगोल का कार्य है।

रेटजेल ने 19 वी सदी के उत्तरार्द्ध मे उत्पत्ति प्रसरण लेबेन्सरम एकुमीन संपात अंर्तसम्बन्धी सह सम्बन्ध वितरण आदि का प्रयोग भौगोलिक विश्लेषण मे करके उसे व्यक्ति निष्ठस्तर से वास्तुनिष्ठ स्तर पर लाने का प्रयास किया

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/__

20वीं सदी के पूर्वार्द्ध मे हैटनर ने- भूगोल के वैज्ञानिक आधार के स्पष्ट करने का प्रयास किया था
अलबर्ट पेंक तथा विलियम डेविस - ने भौतिक भूगोल के क्षेत्र मे वैज्ञानिक विधियो का प्रयोग प्रमाणित किया
20वीं सदी के उतरार्द्ध मे सारव्यकीय परीस्थितिक जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश भूगोल का सिद्धांत (कृषी) भूगोल मे माण्डल का प्रयोग (पीटर हेगटे एवं रिचार्ड शौले) भूगोल के वैज्ञानिक स्वरुप को उभारने के ही प्रयास ऊपर बताया जा चुका है। कि भूगोल एक अन्त वैज्ञानिक अध्ययन है। भौतिक विज्ञानों का सम्बन्ध प्राकृतिक पर्यावरण से तथा सामाजिक विज्ञानो का मानव और सास्कृतिक पर्यावरण से होता है। भौतिक विज्ञान उसे प्राकृतिक पर्यावरण के और सामाजिक विज्ञान उसे मानवी और सास्कृतिक पर्यावरण के विभिन्न अंगो के पारस्परिक सम्बधो की व्याख्या मे सहायता देते है। पर्यावरण की घटनाओ दृश्यो शक्तियो प्रक्रमो और प्रतिरुपो के स्पष्ट रुप से समझने मे सहायक है। भूगोल इन विज्ञानो से प्राप्त निष्कर्षो की अपनी आवश्यकतानुसार ग्रहण करता है। अतः भूगोल के साथ अन्य विज्ञान भी अन्तरानुशासीक होते जा रहे है। उसका एक कारण तो यह है। कि ये विज्ञान एक दूसरे पर आधारित है। लेकिन अपनी विषय वस्तु एवं अध्ययन के उद्देश्य के फलस्वरुप इनकी अध्ययन विधि अलग अलग हो जाती है।

15/9/202

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया